Credit

भाइयों और बहनों

मैं, आप सबका अभिनन्दन करता हूँ।

मैं, गुजरात, की सरज़मी को झुककर सलाम करता हूँ।

मैं "बड़ौदा हार्ट एण्ड रीसर्च सेन्टर" के पूरे स्टाफ का आभारी हूं। यहाँ से हमारी जिन्दगी को एक नयी ऊर्जा मिली है।

बन्दे मातरम्

"जीत निश्चित हो तो कायर भी जंग लड़ लेते है
बहादुर तो वो लोग है जो हार निश्चित हो, फिर
भी मैदान नहीं छोड़ते। भरोसा ईश्वर पर है तो
जो लिखा है, तकदीर में वही पाओगे।
मगर भरोसा खुद पर है, तो ईश्वर वही लिखेगा
- जो आप चाहोगे"

मैं 'हानीनेरी सूबेदार-मेजर' राजेन्द्र प्रसाद सिंह (26 Mar-1970) को (कोर आफ सिग्नल्स) में भर्ती था और (31 मार्च 1998) को (कोर आफ सिग्नल्स) से रिटायर्ड हो गया। इस लम्बी-सीमा रेखा मे, मैं ऐसा बँध कर रह गया कि शायद मेरी जीवन की साँसे भी मेरा साथ छोड़ देगी। ईश्वर शायद मेरी परीक्षा ले रहा था। हुआ कुछ इस प्रकार जिसका शायद मैं बयाँ न कर पाऊ।

मेरा लड़का भी (कोर आफ सिग्नल्स) में रह कर देश की सेवा कर रहा था

मैंने उसे फोन पर सूचित किया कि मुझे GALAXY HOSPITAL HART CARE VARANASI (U.P.)

1. DR. वीनीत अग्रवाल - M.B.B.S. M.D. D.M.
2. " अमित कुमार - M.B.B.S. M.D. D.M.

बाईपास सर्जरी - कराने की सलाह दी है। उस दिन लड़के ने -सायद -

P.T.O.

-फोन रिसीव नहीं किया। दूसरे दिन लड़के कि तरफ से फोन मैं स्वयं रिसीव किया, समाचार मिला कि मैं नहीं आ सकता, क्योंकि मौसम खराब होने के कारण "लेह से चन्डीगढ़" हेलीकाप्टर लैंडिंग बन्द है। ऐसा सुनकर मैंने अपने आँसुओ को रोकने में असहाय राही कि तरह देखता रहा, अपना कोई साथी दूर तक दिखायी नहीं दिया। मैंने अँधीर होकर इन आँसुओ को अपने आप में समेट कर रह गया। सोचा कि शायद अभी भी हमारी मातृभूमि "भारत माता" को मेरी जरुरत है। मैंने अपने को टूटते हुए धीरज और अ-सहाय-राही कि तरह समेटकर "वीर तुम बढ़े चलो" ऐसा कहकर मैं 'गुजरात' कि पावित्र धरती पर अपने पाँव रखे, मेर पाँव थम से गये, लगा मुझे कि मैं माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी कि धरती का स्पर्श कर लूँ शायद कोई सहारा मिल जाय क्योंकि मैं श्री नरेन्द्र मोदी जी के दिखाये राहो पर चलने के लिए सतत प्रयत्न-शील हूँ। बात कुछ ऐसी हुई कि जब मैं 'सूरत' शहर से गुजरा "नवा शीर्डी साई" के दर्शन हुए। मुझे एक ऐसा साथी मिला जो मुझे "बरौडा हर्ट और रिसर्च सेन्टर" का पता दिया। मै 20 JUL को एडमिट हुआ और 21 JUL को आपरेशन हो गया मैं चार दिन 'ICU' वार्ड में भर्ती था। जुलाई 26 को सुबह का समय था एक बच्चे ने मुझे सुबह कि चाय दिया उसी समय दुसरे बच्चे ने पूछा कि सर दवा दूं, ठीक कुछ समय में तीसरे बच्चे ने पूछा सर पानी आप को मिला मैं अपने सारे 'गम' को भूल गया इन बच्चों कि हंसी और प्यार ने मेरा दिल ही जीत लिया। मैंने इन बच्चो के खुशी में शायद 'गुजरात' प्रान्त की वो 'कल्चर' झलक रही थी जिसको मैं माननीय नरेन्द्र मोदी जी के 'वाराणसी' आवागमन पर परखा था।

बच्चे एक टीम के रूप में काम करते हुए पेसेन्ट के साथ व्यस्त थे जब भी समय पाते आपस में मिलकर खुशीयो का इजहार करते मुझे बड़ा प्यारा लगा मैं इन बच्चो की खुशी में डूबा था कि फिर एक बच्चे ने पूछा 'सर' आप ने अभी चाय नही पिया ठंडा हो गया मुझे इन बच्च्यो कि खुशी ने अपने सारे गम भूलाने पर मजबूर कर दिया तभी मुझे सुचित किया गया कि आप को 'ICU' से शिफ्ट कर दिया गया मै कहा ओ गाड ए समय रुक क्यों न गया / मैं उन मासूम बच्चों में माननीय श्री नरेन्द्र - मोदी' जी की कही सब बाते पायी और इस गुजरात' कि कलच्चर (संस्कृति) तो इन मासूम बच्चों के चेहरे से झलक रही थी, मै इन सब चीजो से काफी प्रभावित हुआ और बहुत खुश हूँ और उनकी कही बाणी निश्चय ही खरी पाया

" मौका मिले हमारा गुजरात देखो /

'भाइयो और बहनों' इन्ही शब्दो के साथ मैं अपनी बाणी को विराम देने कि अनुमति चाहूँगा / 'जय - हिन्द'

29.7.17.

आर. पी. सिंह